B. A. History Hon's Part : II
Paper : IV, Unit : I (b), Date : 12 · 10 · 2020 Lecture No : 16

Lesson : जापान का खोला जाना (Opening of Japan)

19वीं सदी के मध्य तक जापान व्यापार एवं धर्म प्रचार के मामलों में
बन्द दरवाजे की नीति का अवलम्बन कर रहा था और किसी भी विदेशी जहाज
को जापानी बन्दरगाहों पर प्रवेश वर्जित था। हालांकि 16वीं सदी में भारत और
चीन की तरह जापान के समुद्री तट पर यूरोपीय व्यापारी और इसाई धर्म
प्रचारक पहुँचे और बस्तियाँ बनाकर व्यापार एवं धर्म प्रचार के कामों में संलिप्त
भी हुए, किन्तु 16वीं सदी के 80 के दशक में इन दोनों कार्यों पर रोक लगा दी गई।
फिर 17वीं सदी की शुरुआत में उन्हें जब छूट दी गई, तो वे मनमानी करने लगे।
परिणामतः 1637-38 में जापान की सरकार ने यूरोपीय जहाजों के प्रवेश ही निषिद्ध
कर दिया और डचों को छोड़कर बाकी सभी यूरोपीय देशों के व्यापार को समाप्त
कर दिया। इस प्रकार जापान का दरवाजा विदेशी व्यापारियों एवं धर्म प्रचारकों
के लिए बन्द हो गया।

19वीं सदी की परिवर्तित परिस्थिति में, जबकि भाप के इंजन
से चलने वाले जहाजों और औद्योगिक क्रान्ति ने व्यापार-वाणिज्य को
उत्तेजित किया तो जापान के बंद दरवाजे को एकबार फिर से खोलने का प्रयत्न
प्रारम्भ हुआ जिसकी पहलकदमी अमेरिका ने की। 1840 के बाद अमेरिकियों की
जापान में दिलचस्पी गहरी होने लगी। इस समय तक अमेरिका प्रशान्त
महासागर तक अपना औपनिवेशिक विस्तार कर चुका था। 1840 में दो अमेरिकी
जहाज जापानी सरकार से मिलकर राजनीतिक सम्बन्ध कायम करने के उद्देश्य
से येदो की खाड़ी में भेजे गए, परन्तु अमेरिका के इस मिशन को सफलता
नहीं मिली। लेकिन इससे अमेरिका निराश नहीं हुआ। नवम्बर 1852 में
अमेरिका ने एक दूसरा मिशन कमाडोर पेरी के नेतृत्व में जापान भेजा। इस
मिशन को अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र जापानी सरकार को
सुपुर्द करने का जिम्मा दिया गया। इस पत्र में माँग की गई थी कि – 1. यदि
कोई अमेरिकी जहाज जापान के निकटवर्ती समुद्र में टूट जाय अथवा संकट
में फँस जाय तो उसे जापान के बन्दरगाह में लंगर डालने, जहाज की
मरम्मत करने, ईंधन तथा खाद्य सामग्री प्राप्त करने की अनुमति दी जाय।
2. अमेरिका के व्यापार के लिए जापानी बंदरगाह खोल दिए जाय। कमोडोर
पेरी के जहाज की सुरक्षा के लिए दो अन्य जहाज भी भेजे गए जिनमें अमेरिकी
सैनिक भरे थे।

3 जुलाई 1853 को पेरी इन जहाजों को लेकर योकोहामा की
खाड़ी में पहुँचा, जिसे जापानी तटरक्षकों ने बंदरगाह की ओर बढ़ने से रोक
दिया और तोप के गोले दागे। किन्तु कमोडोर पेरी रुकने वाला नहीं था
और जवाबी कार्रवाई करते हुए जापान के तट पर पहुँचा और जापानी
तटरक्षकों को यह कहते हुए अमेरिका का पत्र सौंपकर लौट गया कि वह
एक वर्ष बाद इस पत्र का उत्तर लेने पुनः आएगा।

अमेरिकी मिशन के वापस लौटते ही फ्रांस और ब्रिटेन
के युद्धपोत भी जापान के समुद्री क्षेत्र में चक्कर लगाने लगे। जापान इस
परिस्थिति में भारी दबाव महसूस कर रहा था। वह मध्यकालीन युद्धपोतों
और सैनिक साजो-सामान से इनका मुकाबला नहीं कर सकता था। कमोडोर
पेरी ने अपने पत्र के जवाब के लिए एक वर्ष तक प्रतीक्षा करना मुनासिब नहीं
समझा। फरवरी 1854 में पेरी अपने दल-बल के साथ दोबारा जापान पहुँच
गया।

जापान आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित जहाजों का

सामना नहीं कर सकता था। विवशतः उसने कमोडोर पेरी की शर्तों को मानते हुए संधि कर ली। इस सन्धि के अनुसार अमेरिकी जहाजों को जापानी बन्दरगाहों पर प्रवेश तथा लंगर डालने की अनुमति मिल गई। इसके साथ ही अमेरिका का एक प्रतिनिधि स्थायी तौर पर जापान में रहेगा। इस बात पर जापान सहमत हो गया। अमेरिका का अनुसरण अन्य यूरोपीय देशों ने किया और 1854 में इंग्लैंड को 1855 में रूस को और 1857 में हालैंड को भी वे सारी सुविधाएँ प्राप्त हो गई, जो जापान ने अमेरिका को दी थी। किन्तु इन संधियों से उन्हें जापान में प्रवेश ही मिला था। व्यापार-वाणिज्य के लिए अब भी जापान का दरवाजा बन्द था।

1854 की संधि के अनुसार टाउन्सेंड हैरिस अमेरिका का प्रथम प्रतिनिधि एवं राजदूत बनकर जापान पहुँचा। वह काफी चतुर व्यक्ति था। उसने जापान के राजनेताओं से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए और उन्हें बतलाया कि 19वीं सदी में जापान का एकान्तवास स्वयं उसके लिए घातक होगा और अमेरिका एवं यूरोपीय देशों से व्यापारिक सम्बन्ध बनाने से जापान का कायाकल्प हो जाएगा। हैरिस अपने प्रयत्न में सफल रहा और 1858 में अमेरिका तथा जापान के बीच दूसरी संधि हुई, जिसके अनुसार पहले के तीन बन्दरगाहों के चार नए बन्दरगाह अमेरिका के लिए खोल दिए गए और वे सारी सुविधाएँ अमेरिका को प्राप्त हो गई जो उसे चीन तथा अन्य पूर्वी एशियाई देशों में हासिल थी। इस संधि द्वारा आयात-निर्यात कर को भी निर्धारित कर दिया गया, जिसमें बिना अमेरिका की सहमति के जापान बदलाव नहीं कर सकता था। इसके साथ ही जापान में रहने वाले अमेरिकी नागरिकों को जापानी कानून एवं न्याय के दायरे से बाहर रखा गया। इस प्रकार अमेरिका ने जापान में आंतरिक क्षेत्राधिकार भी प्राप्त कर लिए। एक बार फिर फ्रांस, ब्रिटेन, हालैंड और रूस ने भी अमेरिका का अनुसरण किया और उसी के समान सारी व्यापारिक एवं वाणिज्यिक सुविधाएँ हासिल कर ली जो अमेरिका को मिली थी। जाहिर है कि 1858 में बन्द व्यापारिक दरवाजों को औपनिवेशिक शक्तियों ने खोल दिया, जिसे इतिहास में जापान का खोला जाना कहा जाता है।

डा॰ शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी॰ बी॰ कालेज, जयनगर